B.A. (Education)
First Sem. (NEP)

शिक्षा एवं समाज
[Education and Society]

Unit - 1

- शिक्षा → अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र
- शिक्षा एक अनुशासन एवं सामाजिक प्रक्रिया के रूप में,
- शिक्षा के कार्य एवं उद्देश्य,

Unit - 2

- शिक्षा के अभिकरण का अर्थ एवं परिभाषा
- औपचारिक (Formal)
  अनौपचारिक (Informal)
  गैर औपचारिक (Non-formal)

Unit - 3

- समाजशास्त्र → अर्थ, प्रकृति एवं क्षेत्र
- शिक्षा एवं समाजशास्त्र के मध्य सम्बन्ध
- शैक्षिक समाजशास्त्र → अर्थ प्रकृति क्षेत्र एवं सीमाएँ
- शिक्षा का समाजशास्त्र का महत्व
- सामाजिक जिम्मेदारी

Scanned with CamScanner

Unit - 1:

- शिक्षा एवं समाज
- शिक्षा एवं समाज के मध्य सम्बन्ध
- शिक्षा एक परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में, सामाजिक स्तरीकरण, सामाजिक गतिशीलता
- समानता एवं शैक्षिक अवसरों की समानता

Q.1. साक्षर और शिक्षित में क्या अंतर है?

Ans- साक्षर - जो व्यक्ति सामान्य रूप से पढ़ना लिखना जानता है साक्षर कहलाता है, वह शैक्षिक व्यवहार को व्यवहार में इस्तेमाल करने की कला नहीं जानता है।

शिक्षित - जो व्यक्ति विधिवत पढ़ा लिया हो और शिक्षा के महत्व को बखूबी जानता हो और उसे अपना जीवन सरल बनाने के लिए इस्तेमाल में लाने की क्षमता भी रखता हो शिक्षित व्यक्ति कहलाता है।

Scanned with CamScanner

Date ______
Page ______

Q2. साक्षर और शिक्षित मे क्या अंतर है?

Ans. साक्षर → जो व्यक्ति सामान्य रूप से पढ़ना - लिखना जानता है, साक्षर कहलाता है। वह शैक्षिक ज्ञान को व्यवहार मे इस्तेमाल करने की कला को नहीं जानता है।

शिक्षित → जो व्यक्ति विधिवत पढ़ा लिखा हो और शिक्षा के महत्व को बखूबी जानता हो और उसे अपना जीवन सरल बनाने के लिये इस्तेमाल मे लाने की क्षमता भी रखता हो, शिक्षित व्यक्ति कहलाता है।

Q3. समाज, परिवार और भीड़ में क्या अंतर है?

Ans. समाज → दो या दो से अधिक व्यक्तियों से बने समूह को समाज कहते है, जिनमे आपस मे कोई संबंध होता है।

परिवार → परिवार समाज की एक इकाई है। परिवारो से मिलकर ही समाज का निर्माण होता है। (रक्त)

भीड़ → भीड़ मे लोगों का व्यवहार अविवेकी होता है, और सदस्यो के बीच परस्पर-निर्भरता भी नहीं होती है। समूह मे सदस्यों के व्यक्तिगत योगदानो पर निष्पादन आश्रित रहता है।

Scanned with CamScanner

UNIT-I

— शिक्षा —

1. शिक्षा का सामान्य अर्थ - सामान्य अर्थों में शिक्षा से अभिप्राय ज्ञान, विद्या आदि से है,

2. शाब्दिक अर्थ - शिक्षा

↓

Education

↓ लैटिन भाषा

Educatum

E + Duco

↓ ↓

अंदर से बाहर लाना/बढ़ाना

अर्थात

अर्थात - बालक की आन्तरिक शक्तियों या ज्ञान को अन्दर से बाहर की ओर प्रकट करना,

3. संकुचित अर्थ - संकुचित अर्थों में शिक्षा से तात्पर्य विद्यालय में प्राप्त की जाने वाली शिक्षा है,

Scanned with CamScanner

4. व्यापक अर्थ – व्यापक अर्थों में जन्म से लेकर मृत्यु तक प्राप्त की जाने वाली शिक्षा से है।

परिभाषाएँ

महात्मा गाँधी के अनुसार – "शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक तथा मनुष्य के शरीर मन या मस्तिष्क तथा आत्मा के सर्वांगीण विकास से है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार – "मनुष्य में पूर्वनिहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना शिक्षा है।

जॉन ~~डीवी~~ डीवी के अनुसार – जिस प्रकार शारीरिक विकास के लिए भोजन की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार मानसिक विकास के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती है।

अन्य परिभाषाएं –

① शिक्षा द्विध्रुवीय प्रक्रिया है। जॉन एडम्स

② शिक्षा त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है। जॉन डीवी

③ शिक्षा में चुम्बक के समान दो ध्रुव होते हैं।

Scanned with CamScanner

निष्कर्ष - शिक्षा सीखने सिखाने की प्रक्रिया है।

शिक्षा की प्रकृति

1. उद्देश्यात्मक
2. सामाजिक
3. गतिशील / गत्यात्मक
4. सतत / निरन्तर
5. द्विध्रुवीय / त्रिध्रुवीय
6. औपचारिक / अनौपचारिक / गैर औपचारिक
7. नियमित / अनियमित
8. संकुचित / व्यापक
9. वैज्ञानिक
10. दर्शनिक
11. मनोवैज्ञानिक
12. शैक्षिक
13. व्यवसायिक
14. नियोजित / अनियोजित
15. लोकतान्त्रिक / प्रजा तान्त्रिक
16. विकासात्मक
17. सांस्कृतिक
18. धार्मिक
19. परिवर्तनशील
20. सृजनात्मक
21. दूरदर्शी
22. प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष

Scanned with CamScanner

नियमात्मक निदानात्मक
23. उपचारात्मक
24. ज्ञानात्मक
25. चिंतनशील
26. नैतिक
27. नियामक
28. कलात्मक
29.

शिक्षा के कार्य एवं उद्देश्य :-

1. शिक्षा के उद्देश्य – (i) बौद्धिक विकास
(ii) मानसिक विकास
(iii) शारीरिक
(iv) संवेगात्मक
(v) चारित्रिक
(vi) नैतिक
(vii) आध्यात्मिक
(viii) सामाजिक
(ix) व्यवसायिक कुशलता का
(x) सांस्कृतिक
(xi) धार्मिक
(xii) आर्थिक
(xiii) राजनैतिक
(xiv) राष्ट्रीय विकास
(xv) भाषायी विकास
(xvi) सामाजीकरण
(xvii) समायोजन क्षमता का विकास
(xviii) आत्मानुभूति
(xix) मूल्यात्मक विकास
(xx) कुशल नागरिकता का विकास

Scanned with CamScanner

(xxi) आन्त्रिक शक्तियों का विकास
(xxii) संस्कृति का संरक्षण एवं हस्तान्तरण

शिक्षा के क्षेत्र –

- शिक्षा दर्शन
- शिक्षा मनोविज्ञान
- शैक्षिक समाजशास्त्र
- शिक्षा का इतिहास
- तुलनात्मक शिक्षा
- शैक्षिक समस्याएँ
- शैक्षिक प्रशासन एवं संगठन
- शिक्षा कला एवं तकनीकी

अध्ययन के विशिष्ट क्षेत्र :-

शिशु शिक्षा, बाल शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा स्त्री शिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, शिक्षक शिक्षा, निर्देशन एवं परामर्श, शैक्षिक तकनीकी, शैक्षिक नियोजन, शैक्षिक मापन और मूल्यांकन, शैक्षिक सांख्यिकी, शिक्षा में अनुसंधान आदि।

Scanned with CamScanner

classmate
Date 18/08/2023
Page

Unit - II

शिक्षा के अभिकरण (साधन)

शिक्षा के अभिकरण का अर्थ एवं परिभाषाएँ → शिक्षा के अभिकरण से तात्पर्य ऐसे सामाजिक समूह एवं संगठन से होता है। जो बालक की शिक्षा में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में सहयोग करते हैं। या ऐसे साधन जो बालक की शिक्षा में योगदान / सहयोग करते हैं। शिक्षा के साधन कहलाते हैं।

Note → शिक्षा के साधन वे तत्व, कारण, स्थान या संस्थाये हैं। जो बालक पर शैक्षिक प्रभाव डालते हैं।

परिभाषाएँ → सर ग्रॉफे थॉमसन के अनुसार व्यापक अर्थ में संपूर्ण वातावरण व्यक्ति की शिक्षा का साधन है। पर इस वातावरण में कुछ तत्व अधिक महत्वपूर्ण है। जैसे → घर, विद्यालय आदि।

बी० डी० भाटिया के शब्दों में → समाज ने शिक्षा के कार्यों को करने के लिये अनेक विशिष्ट संस्थाओं का विकास किया है। इन्ही संस्थाओ को शिक्षा के साधन कहा जाता है।

शिक्षा के अभिकरणों का वर्गीकरण :-

Scanned with CamScanner

1→ औपचारिक अभिकरण (संविधिक) → ऐसे अभिकरण जो एक निश्चित योजना एवं नियम के अनुसार होते है, औपचारिक अभिकरण कहलाते है।

"शिक्षा के औपचारिक अभिकरण वे सामाजिक समूह या संगठन है जिनका निर्माण कोई समाज सोच समझकर शिक्षा के लिये ही करता है।

Ex→ विद्यालय, शिक्षण संस्थाएँ, मध्यविद्यालय, विश्वविद्यालय, आदि।

इन अभिकरणो द्वारा जिस शिक्षा की व्यवस्था की जाती है, उसके उद्देश्य पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधिया सब कुछ निश्चित होते है।

जन्म से प्रवेश की आयु सीमा तक बालक इनमे शिक्षा ग्रहण नही कर सकता।

Ex→ विद्यालय

2→ अनौपचारिक अभिकरण → ऐसे अभिकरण जिनकी ना तो कोई निश्चित योजना होती है, और ना कोई निश्चित नियम होते है, अनौपचारिक अभिकरण कहलाते है।

" शिक्षा के अनौपचारिक अभिकरण वे सामाजिक समूह या संगठन है जिनका निर्माण सामाजिक संरचना के अंतर्गत

स्वत: ही होता रहता है।

इन अभिकरणों द्वारा जिस शिक्षा की व्यवस्था की जाती है, उसके उद्देश्य पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियां कुछ भी निश्चित नहीं होते हैं।

⇒ बालक व्यवहार और आचरण की शिक्षा अनौपचारिक अभिकरणों द्वारा ही प्राप्त करते हैं।

Ex→ परिवार, समुदाय, धार्मिक संस्थाएँ, राज्य, पुस्तकालय, दूरदर्शन, समाचार पत्र, खेल का मैदान।

3→ निरौपचारिक (गैर औपचारिक) अभिकरण → ऐसे अभिकरण जो औपचारिक एवं अनौपचारिक अभिकरणों का मिला, जुला रूप होते हैं, निरौपचारिक अभिकरण कहलाते हैं।

शिक्षा के निरौपचारिक अभिकरण वे सामाजिक समूह अथवा संगठन हैं, जो बच्चो, युवको, तथा प्रौढ़ों की निरौपचारिक शिक्षा की व्यवस्था करते हैं।

इन अभिकरणों के द्वारा जो शिक्षा प्रदान की जाती है, उसके उद्देश्य पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियां प्राय: निश्चित होते हैं।

Scanned with CamScanner

जन शिक्षा प्रौढ़ शिक्षा और सतत शिक्षा की व्यवस्था निरौपचारिक अभिकरणों द्वारा ही होती है।

Ex→ खुला विश्वविद्यालय, स्काउट और गाइड LSS

Scanned with CamScanner

समाजशास्त्र के जनक - अगस्त कॉम्टे

Date 08/09/2023

Unit - (III) समाजशास्त्र

समाजशास्त्र का अर्थ - समाजशास्त्र का शाब्दिक अर्थ है "समाज का विज्ञान"

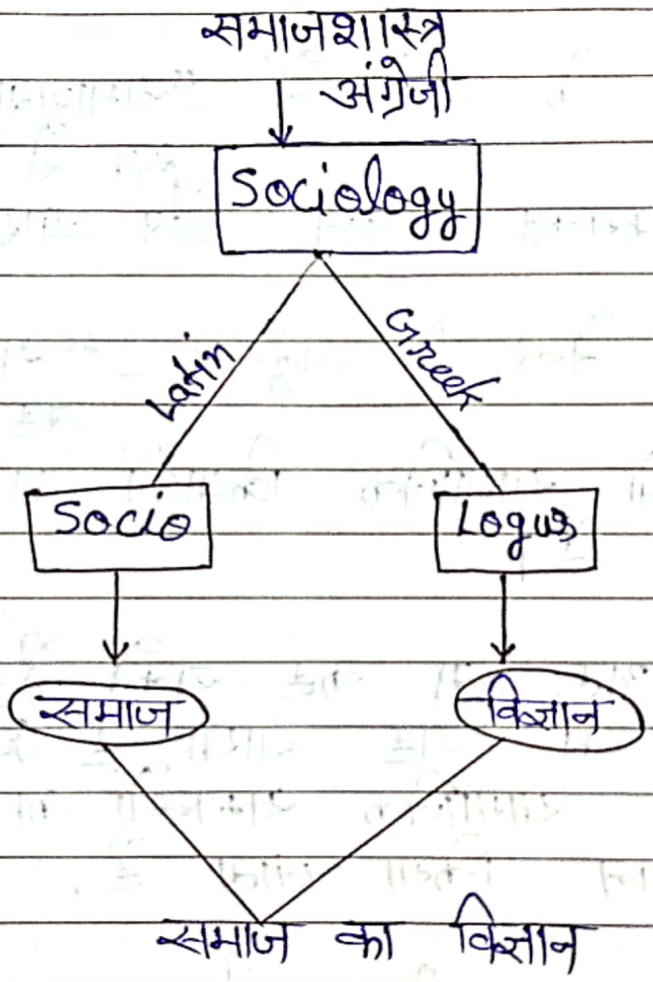

वास्तव में समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धो का विज्ञान है यह समूह का अध्ययन करता है तथा मानव व्यवहार को प्रभावित करने वाले प्रत्येक तत्व का अध्ययन करते हैं,

परिभाषाएँ –

- मैकाइवर एवं पेज के अनुसार "समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों का व्यवस्थित अध्ययन करता है।"
- गिडिंस के शब्दों में – "समाजशास्त्र पूर्ण रूप से समाज का क्रमबद्ध वर्णन और व्याख्या है।"
- मेक्स वेबर के अनुसार – "समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो सामाजिक क्रियाओं का बोध करता है।"

अतः हम कह सकते हैं समाजशास्त्र ज्ञान की वह शाखा है जिसमें समाज अथवा सामाजिक सम्बन्धों का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।

समाजशास्त्र की प्रकृति –

- उद्देश्य पूर्ण
- वैज्ञानिक
- सामाजिक
- बोद्धात्मक
- क्रियात्मक
- सांस्कृतिक

Scanned with CamScanner

शैक्षिक समाजशास्त्र के जनक - जॉर्ज पेनी

Date 18/09/2023
Page

- मानवीय सम्बन्धों का अध्ययन करता है,
- अनुसंधानात्मक
- अन्तः क्रियात्मक
- यौक्तिक

समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र / क्षेत्र -

- समाज अथवा सामाजिक सम्बन्धों का वैज्ञानिक अध्ययन,
- आधारभूत, सामाजिक समूह (परिवार, जाति, प्रजाति एवं धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक, मनोरंजनात्मक तथा कल्याणकारी संस्थाओं) का अध्ययन,
- सामाजिक अन्तः क्रियाओं (प्रेम - द्वेष, संयोग - संघर्ष) का अध्ययन,
- सामाजिक नियंत्रण के कारक तत्वों (संस्कृति, धर्म, परम्परा, रीति - रिवाज, लोक संस्कृति, नैतिकता, विश्वास, मूल्य विधि एवं सत्ता आदि) का अध्ययन,
- सामाजिक परिवर्तन के कारक तत्वों (प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक) का अध्ययन,

शैक्षिक समाजशास्त्र -

अर्थ - ऐसा समाजशास्त्र जिसमें, व्यक्ति, समाज, सामाजिक संस्थाओं, सामाजिक समूहों एवं सामाजिक वर्गों आदि का अध्ययन किया जाता है, और यह देखा जाता है कि इन सब

का मनुष्य के विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है और फिर इस आधार पर शिक्षा का स्वरूप निश्चित किया जाता है। शैक्षिक समाजशास्त्र कहलाता है।

परिभाषाएँ —

ब्राउन — शैक्षिक समाजशास्त्र समाजशास्त्र के सिद्धांतों को शिक्षा के सम्पूर्ण प्रतिक्रियाओं को लागू करता है।

हेन्सन — शैक्षिक समाजशास्त्र शिक्षा तथा समाज के मध्य संबंध का वर्णन करता है।

रोसेक — शैक्षिक समाजशास्त्र समाजशास्त्र का वह पक्ष है जो आधार-भूत शैक्षिक समस्याओं को हल करता है।

निष्कर्ष — उपरोक्त अर्थ एवं परिभाषाओं से हम कह सकते हैं कि समाजशास्त्र के नियमों व सिद्धांतों का शिक्षा जगत में प्रयोग करना ही शैक्षिक समाजशास्त्र कहलाता है।

Scanned with CamScanner

प्रकृति —

- उद्देश्यात्मक
- वैज्ञानिक
- सैद्धान्तिक
- वस्तुनिष्ठ
- सामाजिक
- दार्शनिक
- मनोवैज्ञानिक
- सकारात्मक
- औपचारिक
- अनौपचारिक
- लोकतांत्रिक
- सांस्कृतिक
- सम्बन्धात्मक एवं वर्णात्मक (शिक्षा एवं समाज के मध्य सम्बन्ध का वर्णन)
- उपचारात्मक
- निदानात्मक
- निर्देशात्मक
- शोधात्मक

शैक्षिक समाजशास्त्र का क्षेत्र —

(1) समाज की आवश्यकताओं, परिस्थियों, समस्याओं और माँगो का अध्ययन करना।
(2) सांस्कृतिक वातावरण के सन्दर्भ में व्यक्ति तथा समाज का अध्ययन करना।
(3) विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के पारस्परिक पारस्परिक सम्बन्धो का अध्ययन करना।

Scanned with CamScanner

(4) व्यक्ति और विद्यालय पर समाज के प्रभाव का अध्ययन करना।

(5) समाज में शिक्षक के स्थान और महत्व का अध्ययन करना।

(6) शिक्षक और शिक्षार्थियों के पारस्परिक सम्बन्धों और उन्हें प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।

(7) विद्यालय और स्थानीय सामाजिक संस्थाओं के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन करना।

(8) समाज पर शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।

(9) विद्यालय में लोकतान्त्रिक भावना का विकास करना।

(10) व्यक्ति और समाज की प्रगति के लिए पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन करना।

(11) व्यक्ति के विकास के लिए शिक्षण विधियों का निर्धारण करना।

(12) सामाजिक नियन्त्रण, सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक संगठन, सामाजिक प्रक्रिया और सामाजिक प्रगति आदि पर शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना।

(13) सामाजिक जीवन में समाचार-पत्र, रेडियो, टी.वी., सिनेमा, पुस्तकालय आदि के स्थान और प्रभाव का अध्ययन करना।

(14) व्यक्ति पर संस्कृति के समग्र प्रभावों का अध्ययन करना।

Scanned with CamScanner

शैक्षिक समाजशास्त्र की सीमाएँ -

(1) यह केवल सामाजिक पक्ष की व्याख्या करता है।
(2) यह केवल सामाजिक प्रक्रिया एवं शिक्षा और समाज के आपसी सम्बन्धों का अध्ययन करता है।
(3) शैक्षिक समाजशास्त्र अत्यन्त उपयोगी होते हुए भी हमें दर्शन और मनोविज्ञान की भी आवश्यकता पड़ती है।

शैक्षिक समाजशास्त्र के उद्देश्य एवं कार्य -

हैरिंगटन ने शैक्षिक समाजशास्त्र के निम्नलिखित उद्देश्य बताए हैं -
(1) विद्यालय को प्रभावित करने वाले सामाजिक कारकों का अध्ययन करना।
(2) सामाजिक कारकों का अध्ययन करते हुए व्यक्ति पर पड़ने वाले उनके प्रभाव को समझना।
(3) सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक प्रवृत्तियों को समझते हुए शिक्षा के पाठ्यक्रम का सामाजिक दृष्टि से नियोजन करना।
(4) समाज के सन्दर्भ में शिक्षक के कार्य का ज्ञान प्राप्त करना और सामाजिक प्रगति की दृष्टि विद्यालय का ज्ञान प्राप्त करना।

Scanned with CamScanner

(5) लोकतान्त्रिक सिद्धान्तों को समझना।
(6) इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अनुसन्धान की विधियों का उपयोग करना।

समाजशास्त्र और शिक्षा में सम्बन्ध -

समाजशास्त्र और शिक्षा में सम्बन्ध को हम निम्न बिन्दुओं की सहायता से समझ सकते हैं।

① समाज शास्त्र का शिक्षा पर प्रभाव -

(i) समाजशास्त्र और शिक्षाशास्त्र का अर्थ -

समाज शास्त्रियों के अनुसार शिक्षा एक गतिशील विकास की प्रक्रिया है इसकी सहायता से व्यक्ति और समाज दोनों निरंतर विकास करते हैं।

(ii) समाजशास्त्र और शिक्षा के उद्देश्य -

समाज शास्त्रियों के अनुसार शिक्षा को समाज की वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति करनी चाहिए और समाज परिवर्तनशील है उसकी आवश्यकताएँ बदलती रहती है इसलिए शिक्षा के उद्देश्य भी बदलते रहने चाहिए।

Note- समाजशास्त्रियों की दृष्टि से शिक्षा के कोई निश्चित उद्देश्य नहीं हो सकते हैं।

Scanned with CamScanner

(iii) समाजशास्त्र और पाठ्यक्रम - समाजशास्त्री शिक्षा के पाठ्यक्रम में व्यक्ति और समाज दोनों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले विषयों एवं क्रियाओं को स्थान देने की बात करते हैं।

चूँकि समाज की समस्याएँ एवं आवश्यकताएँ बदलती रहती हैं इसलिए समयानुसार पाठ्यक्रम को बदलते रहना चाहिए।

(iv) समाजशास्त्र और शिक्षण विधियाँ - समाजशास्त्री सामूहिक कार्य की विधियों पर अधिक बल देते हैं।

(v) समाजशास्त्र और अनुशासन - समाजशास्त्रियों के दृष्टिकोण से अनुशासन के विकास के लिये उच्च सामाजिक पर्यावरण आवश्यक होता है, इसलिये केवल निर्देशों तथा आदेशों से अनुशासन का विकास नहीं किया जा सकता।

Note → समाजशास्त्रीयो के अनुसार अनुशासन एक सामाजिक भावना है।

(vi) समाजशास्त्र और शिक्षा तथा शिक्षार्थी → शिक्षक शिक्षार्थी के लिये उच्च सामाजिक पर्यावरण का सृजन करता है, तो शिक्षार्थी इस उच्च सामाजिक पर्यावरण में सक्रिय रूप से भाग

Scanned with CamScanner

लेता है, यदि दोनो में से कोई भी अपने कार्य को उचित रूप से नहीं करता तो शिक्षा की प्रक्रिया सुचारू रूप से नहीं चल सकती।

(vii) समाजशास्त्र और विद्यालय → समाजशास्त्री विद्यालयों को भी जीवन की तैयारी का स्थान नहीं मानते बल्कि समाज का एक वास्तविक रूप मानते है तथा साथ ही वर्तमान जीवन से संबंधित क्रियाओं को महत्व देते है।

(viii) समाजशास्त्र और शिक्षा के अन्य पक्ष → आज शिक्षा के सभी पक्षों पर समाजशास्त्र का प्रभाव दिखाई देता है। समाजशास्त्रियों ने स्पष्ट किया कि शिक्षा व्यक्ति की पहली सामाजिक आवश्यकता है। प्रत्येक समाज को अपने सदस्यों की शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए। उनके इस विचार ने सामान्य, अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था को बढ़ावा दिया तथा साथ ही जन शिक्षा के विचार को भी बढ़ावा मिला।

2→ शिक्षा का समाजशास्त्र पर प्रभाव →

- शिक्षा समाजशास्त्र के निर्माण की आधार-शिला है।

Scanned with CamScanner

- शिक्षा समाजशास्त्र को आगे बढ़ाती है।
- शिक्षा समाजशास्त्र का संरक्षण करती है।
- शिक्षा समाजशास्त्र के ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरण करती है।
- शिक्षा समाजशास्त्र को जीवित रखती है।

निष्कर्ष :-

शैक्षिक समाजशास्त्र की आवश्यकता, उपयोगिता एवं महत्व → शैक्षिक समाजशास्त्र में शिक्षा और समाज के संबंधो का विस्तृत अध्ययन किया जाता है। शिक्षा के स्वरूप को समझने और उसे सुचारू रूप से चलाने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत सभी व्यक्तियो- प्रशासको एवं शिक्षको को इनका अध्ययन करना चाहिए। इसके अध्ययन से हमे निम्नलिखित लाभ होते है।

1→ समाज एवं उसके विभिन्न स्वरूपों की प्रकृति तथा शिक्षा पर उनके प्रभाव का ज्ञान।
2→ शिक्षा का सम्प्रत्यय स्पष्ट होने मे सहायता।
3→ शिक्षा के उद्देश्यो को निश्चित करने मे सहायता।
4→ शिक्षा की पाठ्यचर्या का निर्माण करने में सहायता।
5→ शिक्षण विधियों के निर्माण में सहायता।
6→ शिक्षा मे अनुशासन के सामाजिक सम्प्रत्यय का ज्ञान।
7→ शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक और शिक्षार्थी का स्थान।

Scanned with CamScanner

8→ विधालयो के स्वरूप एंव कार्य निश्चित करने मे सहायता,

9→ शिक्षा की अन्य समस्याओं का हल,

निष्कर्ष — उपरोक्त बिंदुओ एंव व्याख्या से हम कह सकते है, कि समाजशास्त्र और शिक्षा मे अटूट संबंध है।

Date 21/03/23
Page

UNIT → IV

शिक्षा एवं समाज

शिक्षा एवं समाज के मध्य संबंध :-

शिक्षा एक सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप मे → शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण एवं सशक्त साधन है।

Dr. राधाकृष्णन के अनुसार → शिक्षा परिवर्तन का साधन है।

जॉन डीवी D.B. के शब्दों में → शिक्षा ही एक ऐसा साधन है, जो किसी समाज को प्रगति की ओर ले जा सकती है।

शिक्षा के द्वारा ही हम लोगो के विचारों मे परिवर्तन ला सकते है। और समाज की उन्नति भी कर सकते है।

शिक्षा लोगो के विचारो में परिवर्तन करती है, जिससे समाज में परिवर्तन होता है, एवं समाज मे परिवर्तन होने से नए विचारो का जन्म होता है, तथा नए विचार नवीन शिक्षा व नियम का निर्माण करते है

Scanned with CamScanner

यही चक्र समाज में चलता रहता है।

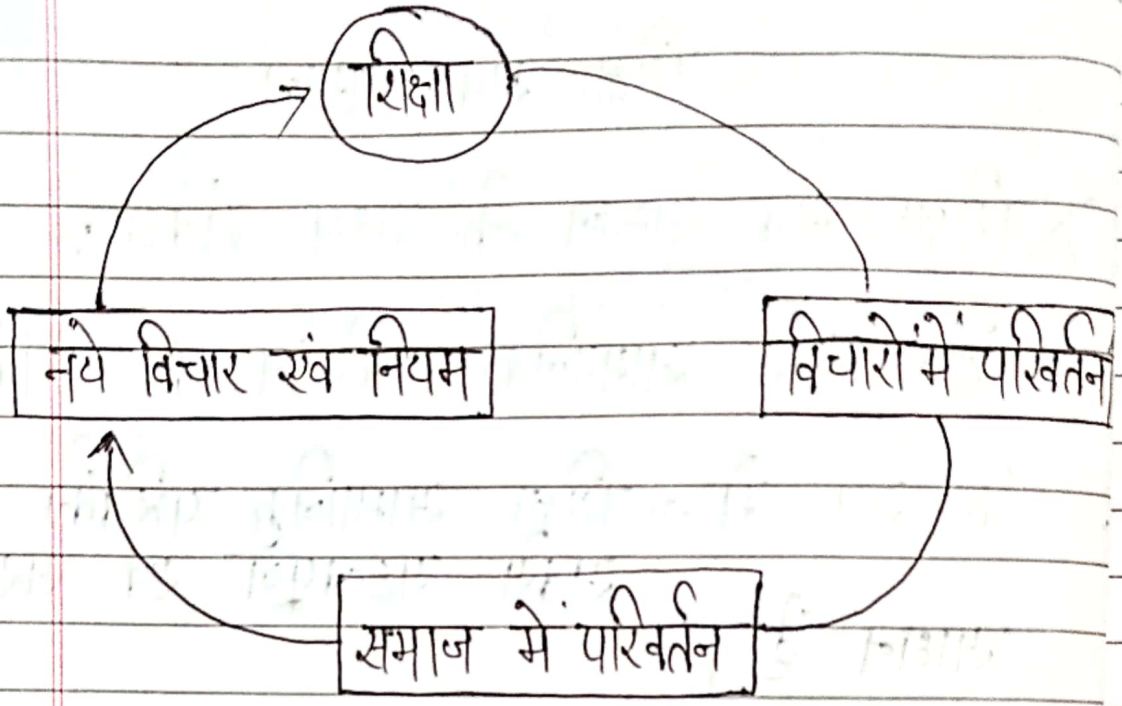

समाज में सामाजिक परिवर्तन लाने में शिक्षा निम्न भूमिका निभाती है –

- परिवर्तन के लिये मानसिक रूप से तैयार करना।
- पूर्वग्रहों को बदलना और नवीनता की प्रेरणा देना।
- नवीन परिवर्तनों को प्रोत्साहित करना।
- परिवर्तनों के मूल्यांकन में सहायता करना।
- सास्वत मूल्यों को स्थाई करना।
- ज्ञान में निरंतर वृद्धि करना।
- संस्कृति का हस्तानान्तरण न करके उसमें परिवर्तन और सुधार करना।
- एकता तथा समग्रता उत्पन्न करना।
- मानवीय तथा सामाजिक सामाजिक संबंधों की स्थापना करना।
- सामाजिक परिवर्तन में कुशल नेतृत्व प्रदान

Scanned with CamScanner

करने में सहायता करना।

- अंग्रेजी शिक्षा के कारण सामाजिक परिवर्तन।
- विज्ञान की शिक्षा के कारण सामाजिक परिवर्तन
- तकनीकी के कारण सामाजिक परिवर्तन।

निष्कर्ष :- उपरोक्त बिंदुओं की सहायता से हम यह समझ सकते हैं, कि किस प्रकार शिक्षा सामाजिक परिवर्तन में अपना अनूठा योगदान करती है।

"शिक्षा एक ऐसा हथियार है, जिसकी सहायता से बिना किसी का भी रक्त बहाए सबको एक सूत्र में बाँधा जा सकता है।

सामाजिक स्तरीकरण -

① अर्थ व परिभाषा - सामाजिक स्तरीकरण का अर्थ समाज के अन्तर्गत सम्पूर्ण जनसंख्या का विभिन्न समूहों या विभिन्न स्तरों में बँट जाने की प्रक्रिया से है।

प्राचीन भारतीय समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य, शूद्र, सामाजिक स्तरीकरण का ही उदाहरण है।

नोट - भारतीय समाज में स्तरीकरण का मूल आधार जाति वर्ग है।

Scanned with CamScanner

परिभाषाएँ –

मुरे के अनुसार ⇒ "समाज का उच्च और निम्न इकाईयों में क्षैतिज विभाजन ही स्तरीकरण है,

आर. एन. मुखर्जी के अनुसार ⇒ "सामाजिक स्तरीकरण समाज को उच्च और निम्न वर्गों में विभाजित करने और उनकी स्थिति और भूमिका को निर्धारित करने की एक सामाजिक व्यवस्था है",

निष्कर्ष – उपरोक्त अर्थ एवं परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक स्तरीकरण वह सामाजिक व्यवस्था है, जिसमें सम्पूर्ण समाज विभिन्न स्तरों में विभाजित रहता है।

नोट – यह व्यवस्था समाज को धन पद प्रतिष्ठा और शक्ति के आधार

Scanned with CamScanner

classmate
Date 30/09/2023
Page

पर विभिन्न समूहों या स्तरों में विभाजित कर देती है।

सामाजिक स्तरीकरण की आवश्यकता एवं महत्व —

सामाजिक स्तरीकरण की आवश्यकता एवं महत्व को निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

(1) समाज की उन्नति एवं विकास के लिए,

(2) सामाजिक व्यवस्था में निरन्तरता एवं स्थायित्व को बनाए रखने के लिए।

(3) समाज में व्यक्ति की स्थिति और कार्य निश्चित करने के लिए।

(4) सामाजिक संगठन को सुव्यवस्थित बनाए रखने के लिए।

(5) समाज के विभिन्न वर्गों में परस्पर निर्भरता बनाए रखने के लिए।

(6) लोगों के सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास करने के लिए।

(7) सामाजिक संगठन व व्यवस्था को सरल करने के लिए।

Scanned with CamScanner

(8) समाज में वर्ग विभाजन हेतु।

सामाजिक स्तरीकरण की विशेषताएँ -

(1) प्राचीनकाल में सामाजिक स्तरीकरण का आधार आयु, लिंग; जल, शारीरिक शक्ति आदि प्रदत्त गुण थे जबकि आधुनिक काल में अर्जित गुणों का महत्व है।

(2) सामाजिक स्तरीकरण प्रत्येक समाज में विद्यमान रहता है।

(3) सामाजिक स्तरीकरण के स्वरूप और आधार में अन्तर हो सकता है।

(4) स्थान, काल, सभ्यता और संस्कृति के अनुसार इसके अनेक स्वरूप देखे जा सकते हैं।

(5) यह कुछ व्यक्तियों तक सीमित ना होकर सम्पूर्ण समाज में व्याप्त होता है।

(6) इसको समाज में व्यक्तियों को प्राप्त पदों एवं परिस्थितियों के आधार पर।

(7) यह परिणामिक है।

Scanned with CamScanner

(8) यह समाज के अन्दर असमानता पैदा करता है।

(9) इसके अन्तर्गत समाज क्रमशः उच्च और निम्न सामाजिक श्रेणी में विभाजित किया जाता है।

(10) सामाजिक स्तरीकरण समाज की उन्नति और विकास के लिए जरूरी है।

सामाजिक स्तरीकरण के आधार -

इसके मुख्य तीन आधार हैं,

(1) प्राणीय शास्त्रीय आधार - (I) आयु
(II) लिंग
(III) रक्त संबंध या जन्म

(2) आर्थिक आधार - (I) सम्पत्ति
(II) व्यवसाय

(3) अन्य आधार - (I) शारीरिक और बौद्धिक कुशलता
(II) धार्मिक ज्ञान
(III) राजनीतिक स्थिति

Scanned with CamScanner

Date 10/10/2023
Page

सामाजिक स्तरीकरण और शिक्षा -

सामाजिक गतिशीलता -

अर्थ - व्यक्ति या मूल्य का एक सामाजिक स्थिति से दूसरी सामाजिक स्थिति में परिवर्तन सामाजिक गतिशीलता है।

Note - यह सामाजिक परिवर्तन का अंग है।

उदाहरण - (1) एक व्यक्ति का गाँव छोड़कर शहर में बस जाना।
(2) एक लिपिक का शिक्षक बन जाना।
(3) साधारण मजदूर का लॉटरी लगने पर धनवान बन जाना आदि।

परिभाषाएँ -

बोगार्डस के अनुसार - सामाजिक स्थिति में कोई भी परिवर्तन सामाजिक गतिशीलता है।

सी० वी० गुड - " किसी व्यक्ति या मूल्य का एक सामाजिक स्थिति से सामाजिक स्थिति में जाना ही सामाजिक गतिशीलता है।

Scanned with CamScanner

सामाजिक गतिशीलता के रूप –

① क्षैतिज या समतल सामाजिक गतिशीलता – व्यक्ति या समूह के केवल स्थान में परिवर्तन होने को क्षैतिज या समतल गतिशीलता कहते हैं।

Note – इस प्रकार की सामाजिक गतिशीलता में व्यक्ति के सामाजिक पद में कोई भी परिवर्तन नहीं होता है।

उदाहरण – किसी छोटे शहर में क्लर्क के पद पर कार्यरत व्यक्ति यदि बड़े शहर में क्लर्क बन जाता है तो इसे क्षैतिज गतिशीलता कहते हैं।

② उर्ध्वाधर या लम्बवत सामाजिक गतिशीलता –
किसी व्यक्ति या समूह के एक पद से दूसरे पद पर पहुँचने को उर्ध्वाधर या लम्बवत् सामाजिक गतिशीलता कहते हैं।

Note – इसमें पद परिवर्तन निम्न से उच्च की ओर तथा उच्च से निम्न की ओर होता है।

Scanned with CamScanner

उदाहरण - बैंक में क्लर्क के पद पर कार्य कर रहे व्यक्ति का PO के पद पर आ जाता है जाना।
यह गतिशीलता दो प्रकार की होती है:

(1) उपरिमुखी गतिशीलता
(2) अधोमुखी गतिशीलता

उपरिमुखी गतिशीलता - किसी व्यक्ति या समूह के निम्न सामाजिक स्तर से उच्च सामाजिक स्तर तक पहुँचने की प्रक्रिया को उपरिमुखी गतिशीलता कहलाती है। उदाहरण - एक रिक्से चालक के बेटे का इंजीनियर बन जाना।
अधोमुखी गतिशीलता - किसी व्यक्ति या समूह का अपने स्तर पद से नीचे चले जाना अधोमुखी गतिशीलता है।

उदाहरण - व्यापार में घाटा होने से उच्च व्यवसायिक व्यक्ति का निम्न स्तर में आ जाना।

सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करने वाले कारक -

- शिक्षा।
- किसी सामाजिक वर्ग में उपलब्ध

- सामाजिक पदों की संख्या में परिवर्तन।
- प्रसवन दर की विविधता।
- पदों की स्थिति में परिवर्तन।
- वंशानुगत सामाजिक पदों की संख्या में परिवर्तन
- सामाजिक दर्जा।
- आर्थिक समृद्धि।
- व्यवसायिक प्रतिष्ठा।
- शासन व्यवस्था।
- महत्वाकांक्षा का स्तर।
- स्वचालित यंत्रों का प्रयोग।

शिक्षा व सामाजिक गतिशीलता —

समाजों में लोग अपनी सामाजिक स्थिति के दैवी मानते थे। इस कारण उन्होंने प्रचलित सामाजिक ढांचों को चुनौती नहीं दी परन्तु आधुनिक समाज वह है जिसमें प्राचीन सामाजिक स्तरों को समाप्त करके खुली गतिशीलता को स्थान प्रदान किया गया है। इस कारण आधुनिक समाज ने विद्यालय के परम्परागत कार्यों में परिवर्तन किया जिससे वह समाज की गतिशीलता के साथ कदम मिला सके।

विद्यालय एवं प्रमुख कार्य नवीन मार्ग प्रशस्त करना तथा उनको सभी के लिए खोले रखना जिससे वह सामाजिक गतिशीलता के बदले ढांचे के साथ कदम मिला सके विद्यालय इस कार्य को तभी पूरा कर सकता है। जब वह सभी प्रकार के आर्थिक

Scanned with CamScanner

स्तरों के बालकों को अपनी उन्नति के लिए व्यापक अवसर प्रदान करेगा।

शिक्षा व सामाजिक गतिशीलता का सम्बन्ध -

शिक्षा सामाजिक गतिशीलता से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित है। आधुनिक युग में शिक्षा को सामाजिक गतिशीलता की प्रमुख धुरी माना जाता है।

शिक्षा बालकों की क्षमता एवं कुशलता का विकास करके उन्हें सामाजिक गतिशीलता के लिए तैयार करती है शिक्षा द्वारा बालकों को व्यवसायिक गतिशीलता के लिए तत्पर बनाया जाता है।

अतः शिक्षा सामाजिक गतिशीलता का एक महत्वपूर्ण साधन है परन्तु शिक्षकों तथा छात्रों की गतिशीलता में अन्तर पाया जाता है।

① छात्रों की सामाजिक गतिशीलता -

(i) शिक्षा की मात्रा।
(ii) शिक्षा की पाठ्य वस्तु।
(iii) विशिष्ट क्षेत्रों की उच्च शिक्षा।
(iv) विशिष्ट कॉलेज या विश्वविद्यालय का महत्व।

Scanned with CamScanner

② शिक्षकों की सामाजिक गतिशीलता –

(i) विद्यालय शिक्षक
(ii) प्रवक्ता
(iii) वरिष्ठ प्रवक्ता
(iv) प्रोफेसर
(v) प्रिंसपल
(vi) उप कुलपति आदि।

① शिक्षा का सामाजिक गतिशीलता पर प्रभाव
② सामाजिक गतिशीलता का शिक्षा पर प्रभाव।

समानता का अर्थ – समानता शब्द का मूल अर्थ एक जैसा या बराबर शब्द से किया जाता है।

भारतीय संविधान में मौलिक अधिकार के अन्तर्गत कहा गया है कि सभी व्यक्ति समान है। जाति, वर्ण, धर्म या लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाएगा, परन्तु समाज में उपस्थित सभी लोगों की आवश्यकताएँ क्षमताएँ तथा योग्यताएँ भिन्न-भिन्न होती है इस स्थिति में सभी के साथ एक जैसा व्यवहार कैसे किया जा सकता है, हाँ हम यह कह सकते है कि सभी के अधिकार एवं अवसर समान है,

Scanned with CamScanner

शैक्षिक सन्दर्भ में समानता का अर्थ- शिक्षा में समानता से अभिप्राय समाज के सभी वर्गों, धर्मों तथा जाति के लोगों को शिक्षा के समान अवसरों की प्राप्ति से है।

दूसरे शब्दों में शिक्षा में समानता की स्थिति विद्यमान है यह केवल तभी कहा जा सकता है जब शिक्षा प्रदान करते समय जाति, धर्म, लिंग तथा वर्ग के आधार पर कोई भेदभाव न किया जाए और सबके प्रति समानता का व्यवहार किया जाए।

समानता एक आंतरिक भावना है, जिसका प्रदर्शन राज्य द्वारा कुछ नियमों को बनाकर किया जा सकता है।

जैसे- ① सभी व्यक्तियों को विकास के समान अवसर प्रदान किए जाए।
② नागरिकों के मध्य जाति, भाषा, धर्म रंग के आधार पर भेदभाव न किया जाए।
③ समान व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार किया जाए।
④ कानून की नजर में सभी व्यक्ति समान है।

नोट- संयुक्त राष्ट्र संघ की सामान्य परिषद द्वारा मानवीय अधिकारों की

Scanned with CamScanner

सर्वभौमिक उद्घोषणा के अन्तर्गत समानता की अवधारणा को और बल मिला और इसी से शिक्षा जगत में शैक्षिक अवसरों की समानता के प्रत्यय का निर्माण हुआ।

शिक्षा में समानता की आवश्यकता -

① सम -समाज की स्थापना में सहायक।
② जनतंत्रीय सफलता में सहायक,
③ ऊँचे सामाजिक स्तर में सहायक।
④ राष्ट्रीय विकास में सहायक।
⑤ आर्थिक विकास में सहायक।

शैक्षिक अवसरों की समानता का अर्थ -

① प्राथमिक स्तर पर शिक्षा में समानता का अर्थ -

प्रजातंत्र को सफल बनाने के लिए देश के सभी लोगों का साक्षर होना आवश्यक अनिवार्य है। इसलिए भारतीय संविधान के निर्देशक सिद्धान्त के अन्तर्गत धारा 45 में 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का आयोजन किया गया है।

प्राथमिक शिक्षा के द्वारा ही बच्चों को वास्तविक क्रियाओं और अनुभवों का ज्ञान प्रदान करके उन्हें भावी जीवन के लिए तैयार किया जाता है उनका दृष्टिकोण

Scanned with CamScanner

विस्तारित करके उनमें काम के प्रति आदर भाव उत्पन्न करके एक अच्छे नागरिक के गुण विकसित किए जा सकते है।

नोट - प्राथमिक स्तर पर शिक्षा का पाठ्यक्रम एक जैसा ही रखा गया है.

② माध्यमिक स्तर पर शिक्षा में समानता का अर्थ -

माध्यमिक स्तर पर बच्चों का मानसिक, शारीरिक तथा संवेगात्मक विकास होने के कारण व्यक्तिगत विभिन्नताएँ दिखाई देने लगती है, इसीलिए पाठ्यक्रम में व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न विषयों का समावेश करना आवश्यक समझा जाता है, मानसिक स्तर पर विविधतापूर्ण पाठ्यक्रम को अपनाकर बच्चों की रुचि, योग्यता, क्षमता तथा आवश्यकता के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने के अवसर दिए जाते है।

उच्च स्तर पर शिक्षा में समानता का अर्थ -

उच्च स्तर पर शिक्षा की समानता से अर्थ योग्यता तथा रुचि के आधार पर उच्च शिक्षा में निवेश देने से लिया जाता है।

Scanned with CamScanner

उच्च स्तर पर शैक्षिक अवसरों की समानता से अभिप्राय है कि उच्च शिक्षा के द्वार सभी के लिए खुले हैं परन्तु निष्पक्षता के सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुए केवल योग्यता के आधार पर ही उच्च शिक्षा में प्रवेश दिया जाता है।

शिक्षा में समनता की प्राप्ति सम्बन्धी समस्याएँ -

① निर्धनता।
② पारिवारिक वातावरण।
③ ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में अंतर।
④ जाति व धर्म।
⑤ लड़का लड़की की शिक्षा में असमानता।
⑥ सभी क्षेत्रों में शिक्षा संस्थानों का ना होना।

शिक्षा में समानता सम्बन्धी लक्ष्यों को प्राप्त करने के उपाय -

① निःशुल्क शिक्षा,
② आर्थिक सहायता।
③ अधिक से अधिक शैक्षिक संस्थानों का खोला जाना
④ सामान्य विद्यालय प्रणाली लागू करना।
⑤ सहायक सुविधायें प्रदान करना।
⑥ उच्च शिक्षा में चयन योग्यता के आधार पर
⑦ महिलाओं की समानता के लिए शिक्षा।

Scanned with CamScanner

⑧ अनुसूचित जनजाति तथा पिछड़े वर्ग के लोगों की शिक्षा की व्यवस्था करना।
⑨ अल्पसंख्यकों की शिक्षा।
⑩ विकलांगों की शिक्षा की व्यवस्था करके।
⑪ महिलाओं के लिए शिक्षा में समानता।

"V. Good keep it up..."

नाम- कमला भट्ट
विषय- शिक्षाशास्त्र
महाविद्यालय का नाम-
राजकीय महा० अमोड़ी (चम्पावत)
कक्षा - B.A. I Sem (NEP)
सत्र - [2023-24]

Scanned with CamScanner